ماہنامہ

شعاع عمل

لکھنؤ

دسمبر ۲۰۱۶ء

قَالَ اللّٰهُ تبَارَکَ وَتعَالیٰ قَدْ جَاءَ کُمْ مِنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَ کِتَابٌ مُبِیْنٌ

بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب

نور ہدایت فاؤنڈیشن، حسینیہ غفرانمآبؒ، چوک، لکھنؤ—۳

R.N.I NO. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2014-16 Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month.

Annual Rs. 200/- December 2016 Per copy-Rs. 20/-

Gulab badi faizabad

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ

NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufran Maab, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Ph.:0522-2252230

ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाणीकरण और उसके पहचानने की पद्धति

मौलाना सै0 मुहम्मद शाकिर नक़वी साहब अमरोहवी

कितनी देर से क़लम हाथ में लिये हुए सोच रहा हूँ कि विषय क्षेत्र का विवरण किस दिशा से शुरू किया जाये। क्योंकि ईश्वर के अस्तित्व का इंकार करने वालों का ढंग भी एक जैसा नहीं है। प्रत्येक गुट के इन्कार का कारण दूसरे से भिन्न है। इनका ज्ञान स्तर भी अलग–अलग है। अगर सभी अनीश्वरवादियों को अलग–अलग उत्तर दिया जाये तो यह सिलसिला बहुत लम्बा चौड़ा हो जायेगा। अतएव विषय को सीमित करने के लिए मुनासिब है कि नास्तिकों को उनकी धारणाओं के अनुसार वर्गीकृत कर लिया जाये।

ईश्वर के अस्तित्व को नकारने वाले पाँच वर्गों में बांटे जा सकते हैं। कुछ तो सिर्फ़ ज्ञान के भ्रम की वजह से नास्तिक हैं और कुछ द्वेष भाववश नास्तिक हैं तो कुछ कर्तव्यों के पालन से बचने के लिए ईश्वर का इन्कार करते हैं। कुछ लोग अपने को आधुनिक विचार धारक समझते हुए इन्कार करते हैं और कुछ अल्लाह के अस्तित्व के क़ाएल होते हुए भी नास्तिकों की श्रेणी में आ जाते हैं।

हमारी बहस का सम्बन्ध न उन लोगों से है जो द्वेषभाव से ख़ुदा को नकारते हैं और न उन लोगों से है जो कर्तव्यों से बचने के लिए अथवा अपने को उदारमान और आधुनिक सिद्ध करने के लिए ईश्वर को नहीं मानते क्योंकि यह लोग जानबूझ कर उसका इन्कार कर रहे हैं अर्थात व्यक्तिगत कारणों से अल्लाह से दूर हैं।

इसी के साथ हमारी तर्कना का सम्बन्ध उन लोगों से भी नहीं है जो अल्लाह के क़ाएल तो हैं मगर उसकी जो विशेषतायें उन्होंने मान रखी हैं वह अल्लाह की शान के प्रतिकूल हैं

हमारी बहस सिर्फ़ उन लोगों तक सीमित है जो बौद्धिक स्तर पर दार्शनिक भ्रमों का शिकार हैं। इनमें कुछ बहुत ही उच्च स्तर के शिक्षित हैं और कुछ औसत स्तर के। पहले वर्ग का कहना है कि विभिन्न तत्व किसी एक तत्व से पैदा नहीं हो सकते क्योंकि कोई एक तत्व बस अपने ऐसे तत्व का अविष्कारक या जनक हो सकता है। इनका मशहूर क़ौल है, ''एक से बस एक ही निकल सकता है।''

आज के युग में लगभग 110 तत्वों की जानकारी हो चुकी है। इन लोगों का कहना है। कि एक तत्व जैसे ''हाइड्रोजन'' ज़ाती तौर पर बस बपने अस्तित्व से ''हाइड्रोजन'' ही निकाल सकता है और यह सम्भव नहीं है कि वह ''कैल्शियम'' भी निकाले, वही चाँदी, सोना, लोहा, पारा, फ़ास्फोरस, आक्सीजन आदि तत्वों को भी निकाले। क्योंकि एक से केवल एक का ही निकालना सम्भव है हमें इन लोगों पर आश्चर्य होता है कि वह इतने पढ़े–लिखे होकर इतने बड़े भ्रम का शिकार हो गये उन्होंने ''अविष्कार'' और ''निर्गमन'' (ISSUANCE) को पयार्यवाची समझ लिया और ''एक से बस एक ही निकल सकता है'' के सिद्धान्त पर आँख बन्द करके ईमान ले आये यद्यपि कि इसकी काट स्वयं तमाम यौगिक वस्तुओं की उपस्थिति से हो जाती है फिर कोई इन लोगों से पूछे कि आप की विचार शक्ति' एक होते हुए अनेक वस्तुओं की जननी एवं अविष्कारक कैसे है।

इन्हीं लोगों की एक आपत्ति यह भी है कि अगर इस पूरे ब्रहमाण्ड का सृष्ठा किसी एक ''अस्तित्व'' (वजूद) को मान लिया गया तो फिर सृष्टि की रचना–क्रिया कौन ग्रहण करेगा और

इसका ''प्रभाव'' किस पर पड़ेगा। क्योंकि जब इस ''वजूद'' के अतिरिक्त कोई''मौजूद'' नहीं है तो कोई ''अनस्तित्व'' चीज़ ''अनस्तित्व रहते हुए ''प्रभाव'' कैसे ग्रहण कर सकती है। और अगर यह माना जाये कि इस ''वजूद'' के अलावा शेष वस्तुयें किसी प्रकार से ''मौजूद'' थीं तो फिर सृष्टि—रचना'' का दावा बेकार है। बल्कि हमारा दावा सिद्ध है कि तमाम वस्तुयें स्वयं ही हमेशा से मौजूद हैं। इस भ्रम के जवाब में हम ''विचारशक्ति'' को ही प्रस्तुत करेंगे और प्रश्न करेंगे कि यह आप की बुद्धि और परिकल्पना शक्ति ''एकल'' है और भविष्य के लिए कैसे—कैसे अविष्कार, योजनायें, फ़ार्मूले तैयार करती रहती है। जो सबके सब परिशुद्ध रूप से ''अनस्तित्व'' होते हैं। फिर यह किस तरह आप की विचार शक्ति की ''क्रिया'' ''ग्रहण'' करके आपके मस्तिष्क में पूरा ख़ाका बन जाते हैं और फिर किस तरह ''वजूद'' के सांचे में ढल जाते हैं। बस इस सिलसिले में आप जिस नतीजे पर पहुंचे उसी पर सोचें कि ''प्रथम अस्तित्व'' के ''प्रभाव'' को ''अविद्यमान'' वस्तुओं ने क्योंकर ग्रहण किया होगा।

इसके बाद कुछ मध्यम श्रेणी के लोग हैं जिनका कहना है कि हर वस्तु के एक ''कारक'' को आवश्यक समझने के आधार पर ब्रह्माण्ड की सृष्टि का अस्तित्व मान लेना ''निरन्तरता'' का कारण होगा जो ''अकृत और असत्य'' है। इस भ्रम का ब्योरा यह है कि जब उन लोगों से कहा जाता है कि हमारे चारों ओर दिखाई पड़ने वाली वस्तुयें बिना किसी के बनाये वजूद में नहीं आ सकतीं तो यह पूरी सृष्टि बग़ैर किसी के बनाये किस तरह बन सकती है ! तो इसके जवाब में वह तुरन्त कह बैठते हैं कि जब यह मान लिया कि हर चीज़ का बनाने वाला होना चाहिए तो फिर जिस ''अस्तित्व'' को विधाता कहा जा रहा है उसको भी बनाने वाला कोई अस्तित्व होना चाहिए। इस तरह यह सिलसिला अटूट और असीमित हो जायेगा। जो असम्भव है। हम इस भ्रम की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते क्योंकि जिस ''निरन्तरता'' के मिथ्या होने के आधार पर यह लोग ''विधाता'' का इन्कार कर रहे हैं उसी ''निरन्तरता'' का अक्रित एंव असत्य होना वास्तव में ''सुष्टा'' के आस्तित्व का सुबूत है क्योंकि जब ''निरन्तरता'' मिथ्या और अकृत है तो अपने आप इस ''कारक'' और ''प्रभाव'' के क्रम को किसी एक ''कारकों'' के कारक'' पर मजबूरन रोकना पड़ेगा और वही ''कारक'' ब्रह्माण्ड का ''सृष्टा'' होगा।

इसके अतिरिक्त हम किसी ''प्रथम विद्यमान'' को सृष्टि का ''विधाता'' नहीं कहते बल्कि ''प्रथम'' अस्तित्व'' को ब्रह्माण्ड का विधाता कहते हैं। और हमको कोई दार्शनिक ऐसा नहीं मिलता जिसमें यह हिम्मत हो कि वह कह सके कि ''अस्तित्व'' स्वयं अपने ''अस्तित्व'' के लिए किसी ''कारक'' का मुहताज है क्योंकि ''अस्तित्व'' बस ''अस्तित्व'' है। ''अस्तित्व'' को ''अस्तित्व'' में लाने वाले किसी कारक को अगर माना गया तो परिणाम स्वरूप अस्तित्व से पहिले अस्तित्व ही मानते रहना पड़ेगा और क्रम रोका जाये या न रोका जाये बहरहाल अस्तित्व साबित रहेगा और हमेशा—हमशा साबित रहेगा।

इस भाव को हम दूसरी तरह भी प्रस्तुत कर सकते हैं कि ''अनस्तित्व'' के वास्ते प्राथमिकता मानना मुशिकल है क्योंकि अगर ''अनसित्व'' पहले होगा तो फिर ''अनिस्तत्व'' के बाद किसी का भी ''अस्तित्व'' बग़ैर किसी का सहारा लिए असम्भव होगा। हॉलाकि हर सहारा स्वयं अस्तित्वहीन होगा। परिणाम स्वरूप ब्रह्माण्ड का अस्तित्व ही असम्भव हो जायेगा इसलिए अस्तित्व को सदा से मानना पड़ेगा और सदा—सदा के लिए मानना पड़ेगा। बस इसके बाद निर्णय स्वयं बुद्धिजीवियों के हाथ में है। अगर यह नुमाइशी पढ़े—लिखे नहीं बल्कि वास्तव में ज्ञानी मुणी है तो ख़ुद फ़ैसला कर लेंगे कि सारी की सृष्टि को

हमेशा से मौजूद माना जाये या सिर्फ़ एक वजूद को हमेशा से स्वीकार किया जाये। अगर वह वास्तव में ज्ञानी हैं तो समझ लेंगे कि यदि सम्पूर्ण सृष्टि का अस्तित्व ख़ुद–ब–ख़ुद हमेशा से मान लिया गया तो किसी वस्तु के लिए भी अनस्तित्व नहीं सोचा जा सकता क्योंकि अनस्तित्व सिर्फ़ वही सा ग्रहण कर सकता है जिसमें अस्तित्व को ग्रहण करने की क्षमता हो। स्वयं कर सकता है इसलिए जब सम्पूर्ण सृष्टि स्वयं ''अस्तित्व'' होगी तो ''अनस्तित्व'' का प्रश्न ही समाप्त हो जायेगा। हालांकि ''अनस्तित्व'' का सिलसिला बराबर जारी है। दूसरी बात यह कि सृष्टि ''मौजूद'' है, ''अस्तित्वधारी'' है ''अस्तित्व'' नहीं। ''अस्तित्व'' बहरहाल ''अस्तित्वधारी या विद्यमान'' से पहले होता है।

हमें आश्चर्य होता है ज्ञान के उन दावेदारों पर जो सृष्टि के ख़ुद–ब–ख़ुद पैदा होने का दावा करते हैं। और मात्र एक ईश्वर के ख़ुद से वजूद को असम्भव कहते हैं। यानी जिस बात को एक के लिए असम्भव समझते हैं उसी बात को अनगिनत और असंख्य चीज़ों के लिए सिर्फ़ जायज़ ही नहीं समझते बल्कि अपनी मान्यता भी बना लेते हैं। फिर कितना मज़ेदार है यह दर्शन कि ब्रह्माण्ड के एक विधाता कारकों के कारक का अस्तित्व, ख़ुद–ब–ख़ुद असम्भव और पूरी सृष्टि का ख़ुद–ब–ख़ुद अस्तित्व में आना सम्भव।

यहां तक हमने कुछ शंकाओं का निवारण किया जो उच्च शिक्षित वर्ग द्वारा प्रकट की जाती हैं। लेख को संक्षिप्त रखने के लिए केवल दो एक बातें और प्रस्तुत करते हैं। आज ''इकाई'' की कल्पना एक वास्तविक स्वरूप बन गई है। किसी भी ज्ञान की बुनियाद उसकी इकाई की कल्पना किए बिना सम्भव नहीं। क्योंकि प्रत्येक वस्तु का अपनी इकाई से प्रगटीकरण होता है। विभिन्न वस्तुएं एक दूसरे में मिलने के बाद पहिला काम यही करती हैं। कि वह अपनी इकाई की तलाश करती हैं जो सब में सम्मिलित हो सके और योग को भी बनाये रख सके। अतः अस्तित्व को इकाई जिसे हम ''केन्द्र'' भी कह सकते हैं, अपरिहार्य हैं। क्योंकि इस इकाई के बिना विद्यमान वस्तुओं में पाये जाने वाले 'वजूद' के गाड़ी आगे नहीं बढ़ सकती। बस इसलिए हम यह बात पूरे दावे के साथ कह सकते हैं कि संसार का कोई वैज्ञानिक ऐसे अस्तित्व से इन्कार नहीं कर सकता जिस पर सृष्टि की तमाम विद्यमान वस्तुओं का अस्तित्व निर्भर करता हैं। और बस वजूद की इस इकाई, वजूद की पहली मन्ज़िल को ही हम अपने विभिन्न शब्दों से व्यक्त करते हैं। कभी हम इसे कारकों का कारक, कभी कारकों का सृजक और कभी सृष्टि का विधाता और कभी ईश्वर कहते हैं। आप अपनी ख़ुशी से इस भाव को किसी भी शब्द से व्यक्त करें परन्तु मानना आपको भी पड़ेगा।

हमें उन दार्शनिकों की बुद्धि पर भी अचरज होता है जो ''सीमित'' और ''असीमित'' की बहस में गहरी दिलचस्पी लेते हुए अक्सर चीज़ों के लिए ''असीमित'' होने का दावा तो बड़ी आसानी से कर देते हैं लेकिन जब ''असीमित प्रथम'' का सवाल आता है तो उसका अस्तित्व असम्भव कहने लगते हैं। पता नहीं उस वक़्त उनकी कौन सी बुद्धि काम कर रही होती है। हमें इन अनोखे विचारकों पर भी हंसी आती है जो अपने को बुद्धिजीवियों की श्रेणी में गिनते हैं परन्तु ''गति की व्यवस्था'' के लिए ''गति केन्द्र'' अर्थात''गति देने वाले'' की उपेक्षा पर कमर कसे हैं। बहरहाल हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि यह सब लोग वास्तव में 'सृष्टि–व्यस्था'' की परस्पर विरोधी तकनीक से हक्का–बक्का होके ''सृष्टा'' के आगे गर्दन नवा देने के बजाय उसका इन्कार कर बैठते हैं। यद्यपि यही परस्पर विरोध उनसे विश्वास की मांग कर रहा होता है। यदि हम इनके इन्कार को ''वैचारिक मृत्यु'' कहें तो अनुचित न होगा। यह लोग अपने इंकार को सही सिद्ध करने के लिए विभिन्न प्रकार से तर्क प्रस्तुत करते हैं। जैसे कोई वस्तु बिना कान के कैसे सुन सकती है, बिना आँख के कैसे देख

सकती है और बिना दिमाग़ के वस्तुओं का बोध कैसे कर सकती है।

कितनी आश्चर्यजनक बात है कि अपने हाथों बनाया हुआ ''कमप्यूटर'' यह सब कुछ कर सकता है। विद्युत मीटर हर कनेक्शन के छोटे से छोटे परिवर्तन को चेक कर सकता है परन्तु ''शक्तियों'' को अस्तित्व भूषा प्रदान करने वाली ''परमशक्ति'' कुछ नहीं कर सकती? ट्रांज़िस्अर हज़ारों मील दूर की बातें बिना कान के सुनकर बिना ज़बान के उसको दोहरा सकता है परन्तु ब्रह्माण्ड के विधाता के लिए यह बात असम्भव है? बात मात्र इतनी है कि यह लोग सृष्टि काअवलोकन करते–करते अपनी हक़ीक़त भूला बैठे कि वह स्वयं क्या हैं? इस विशालतम ब्रह्माण्ड में उनकी हैसियत क्या है ? अचरज की बात है कि जिन लोगों की निगाहों ने सृष्टि के विस्तार को समझने की खोज में दस अरब प्रकाश वर्ष की दूरी पर ''आकाशगंगा'' खोज निकाली है वह स्वयं अपने मस्तिष्क के फैलाव और अपने दिमाग़ की केन्द्रीय शक्ति को भूल जाते हैं। जो विस्तृत फ़ासलों पर छा जाने का हौसला रखती है और उन पर अपना नियन्त्रण रखना चाहती है। इस केन्द्रीय मस्तिष्क शक्ति का सृष्टि के फैलाव से क्या अनुपात है। इसको समझने के लिए पहले दस अरब प्रकाश वर्ष का अनुमान लगाइये कि प्रकाश जो एक सेकेण्ड में 186000 मील की दूरी तय करता है वह एक वर्ष में कितना फ़ासला तय करेगा और दस अरब साल में वह कितनी दूरी तय कर लेगा। और यह दूरी अब तक की खोज के अनुसार ब्रह्माण्ड का अर्धव्यास ही होगी और यह दूरी उस समय तय होगी जब कि हम पृथ्वी को सृष्टि का केन्द्र मानें और यदि पृथ्वी को ब्रह्माण्ड के सिरे पर माना जाये तो फिर ब्रह्माण्ड के अर्ध व्यास का अनुमान असम्भव होगा।

बहरहाल इस समय सृष्टि के फैलाव का अन्दाज़ा इस तरह लगाया जा सकता है कि हमारी आकाश गंगा के फैलाव की यह स्थिति है कि इसके एक सिरे से दूसरे तक प्रकाश को पहुंचने के लिए एक लाख साल की आवश्यकता है। हमारी इस विस्तृत आकाश गंगा के अतिरिक्त अब तक एक खबर आकाश गंगाओं की खोज का दावा किया जा चुका है। जब कि एक आकाश गंगा से दूसरी आकाश गंगा के बीच का फ़ासला भी सैकड़ों प्रकाशवर्ष होता है।

यह है हमारे ब्रह्माण्ड का विस्तार और इसीलिए कहा जाता है इस सम्पूर्ण तात्विक जगत में यह आकाशगंगा केवल एक बिन्दु मात्र है। और इस आकाशगंगा की तुलना में हमारा सौर्य मण्डल एक बिन्दु के समान है। और सौर्य मण्डल की तुलना में स्वयं सूर्य एक बिन्दू है। और सूर्य से हमारी पृथ्वी 13 लाख गुना छोटी है।

अब पूरे ब्रह्माण्ड में केवल पृथ्वी की हैसियत पर दृष्टि रखते हुए अपने मस्तिष्क की केन्द्रीय नियन्त्रण शक्ति और छा जाने की क्षमता का जायज़ा लेते हुए सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के विस्तार क्षेत्र को छू लेने की इच्छाओं और उन पर छा जाने के मनोरथ को देखते हुए'' सृष्टि व्यवस्था'' पर छाई हुई शक्ति की कल्पना करें जो इस विस्तार में पाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु को वास्तव में अपने नियन्त्रण में लिए हुए है और प्रत्येक व्यवस्था का जीवन केन्द्र है।

बहरहाल इस महान सृष्टि की संरचना का स्त्रोत और अस्तित्व के सिलसिले की पहली कड़ी एक ऐसा यथार्थ है कि जिससे इंकार केवल अज्ञानता और मुर्खता के वशीभूत तो किया जा सकता है परन्तु शास्त्रीय सिद्धान्तों के आधार पर इंकार सर्वधा असम्भव है। विशेष कर आज के युग में जबकि नये–नये अविष्कार, ''सृष्टा'' के अस्तित्व का नया–नया प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं। ऐसी दशा में कोई बदहवास व्यक्ति ही ''ईश्वर'' का इंकार कर सकता है क्योंकि आज प्रत्येक नया अनुसंधान , विधाता के ''वजूद'' का एक नया सुबूत प्रस्तुत कर रहा है।

दूसरा वर्ग

हमारा विचार था कि इस लेख में उन लोगों की उपेक्षा कर दी जाये जो किसी न किसी

प्रकार ब्रह्माण्ड के सृष्टा के अस्तित्व को मानते हैं। क्योंकि उनके विश्वासों से बहस दृष्टिगत विषय से अलग एक स्वतन्त्र बहस है। लेकिन चुँकि हमारे शीर्षक का एक अंश ईश्वर की पहचान की पद्धति भी है इसलिए सृष्टा के विषय में विभिन्न समुदायों के दृष्टिकोण पेश कर देना भी आवश्यक है ताकि ईश्वर की पहचान के सिलसिले में सही मंज़िल सामने आ सके। क्योंकि इस संसार का अविष्कारक मानने वालों के भी अनगिनत वर्ग हो गये हैं। जिनमें प्रत्येक वर्ग ने अपनी अपनी उड़ान के हिसाब से विधाता के बारे में अपने विचार एवं विश्वास प्रस्तुत किये हैं। इनमें कुछ लोग केवल भौतिकवादी हैं और काल (दहर) को सृष्टा समझते हैं। कुछ लोग मूल तत्वों को सृष्टि का कारक कहते हैं। इन्ही में वह लोग भी शामिल किये जा सकते हैं जो पेड़ों और पत्थरों को विधाता समझते है और जो प्रकाश एवं अग्नि को सृष्टि का हेतु समझते हुए इन्हें सृष्टि का उदगम मानते हैं।

इसके बाद कुछ लोग भौतिकवाद के साथ अध्यात्मवाद को भी सम्मिलित कर लेते हैं। चुनांचे यह लोग देवी देवताओं, आत्मा और फ़रिश्तों का भी सृष्टि में हस्तक्षेप मानते हैं।

इन सब लोगों के विचारों के खण्डन के लिए केवल इतना कह देना पर्याप्त है कि यह सब चीज़े जिनको इन लोगों ने ''सृष्टा'' समझ रखा है, भौतिक और सीमित विशिष्टताओं और क्षमताओं की स्वामी हैं। दूसरी चीज़ों का प्रभाव ग्रहण करके बदल जाने वाली हैं। जबकि सृष्टि के उदगम में सृष्टि की विशालता और विस्तार और उसकी छोटी से छोटी आंशिक क्षमताओं को व्याप्त होना चाहिए। इसके अलावा यह सब चीज़े यौगिक़ हैं और यौगिक निश्केवल तत्व का सृष्टा नहीं हो सकता। रहा ''काल'' का सवाल तो यह शब्द दार्शनिकों का एक परिकल्पित सापेक्ष संकेत है। जो स्वतः प्रमाणित और अप्रमाणित 'विद्यमान'' का परिणाम है न कि ''विद्यमान'' उसका परिणाम। तात्पर्य यह है कि ''विद्यमान'' को पहले माने बिना ''काल'' का सापेक्ष अस्तित्व भी सम्भव नहीं इसका सीधा मतलब यह हुआ कि ''विद्यमान'' ''काल'' से पहले अस्तित्व में आये।

अतः कोई ऐसी वस्तु जो बाद में ''विद्यमान'' हुई हो पहले से विद्यमान वस्तु की सृष्टा या रचयिता नहीं हो सकता।

इसके बाद सबसे अन्त में वह लोग हैं जो सृष्टि के लिए ईश्वर के क़ायल हैं। परन्तु उसकी विशेषताएं अथवा गुण ऐसे नियत कर रखे हैं कि जिनके कारण अनीश्वरवादियों में गिने जाते हैं। बहरहाल इतनी व्याख्या के बाद यह बात तो स्पष्ट हो ही गयी कि सृष्टि के प्रारम्भ का केन्द्र किसी न किसी हिसाब से प्रत्येक विचारक को मान्य है। भेद केवल सृष्टि के इस उद्‌गम कर्ता के नामकरण और उसकी विशेषताओं में है कि वह क्या है, कैसा है और किन–किन विशेषताओं और शक्तियों का धारक है।

चुँनाँचे अब तक धार्मिक समुदायों ने अपनी–अपनी रूचि और मान्यता के अनुसार ईश्वर के जो गुण गिनाये हैं उनमें से कुछ विश्वास तो सर्वथा हस्यास्पाद हैं और अचरज न होगा कि यदि कुछ अनीश्वर वादियों के इन्कार का कारण ईश्वर के यही तथाकिथत गुणों हों। क्योंकि इन गुणों के द्वारा सृष्टि के उद्‌गमकर्ता का जो ढांचा तैयार होता है बुद्वि किसी तरह इस संग्रह को ख़ुदा मानने के लिए तैयार नहीं हो सकती। यह कारण है कि इस्लाम ने गुणें द्वारा इस चित्रण को ईश्वर का इंकार ठहराया है। और इसीलिए सम्पूर्ण परिशुद्धता गुणों को नकारने में मानी गई है। क्योंकि इंसान के सामने जब–जब सृष्टा की विशेषताएं बयान की गयीं तब–तब इंसान ने सबसे पहले इन विशेषताओं का काल्पनिक चित्र अपने मन में तैयार कर लिया जिसको धीरे–धीरे प्रतिमा की सूरत में ढ़ाल के लोगों के सामने पेश कर दिया और यह प्रतिमायें बाज़ारों में बेची जाने लगीं। और इनकी पूजा की जाने लगी।

स्पष्ट है कि इस तरह के झूरमुट में

फंसा हुआ एक संवेदन शील और श्रेष्ठ विचार रखने वाला विचारक इस प्रकार के ख़ुदा को कैसे मान सकता था। अतः उसने सिरे से ख़ुदा के अस्तित्व का ही इन्कार कर दिया इसमें दोष इन विचारकों का नहीं बल्कि उस ईश्वर रचने वाले वातावरण का था कि जिसने लगातार ईश्वर का परिचय ऐसे गुणों से करवाया कि मन में ख़ुदा का नाम सुनते ही यहाँ हास्यास्पद काया बनना अनिवार्य हो जाये।

इस वातावरण ने ख़ुदा को केवल गुणों के बल–बूते पर मनवाना चाहा था। अर्थात ख़ुदा को इसलिए ख़ुदा मानना ज़रूरी है कि वह बग़ैर कान के सुनता है उसकी उपासना इसलिए अनिवार्य है कि वह बिना ज़बान के बोलता है। और ख़ुदा को ख़ुदा इसलिए मानना चाहिए कि वह एक ही समय में बीस–बीस काम अंजाम दे सकता है, आदि आदि। चुनाँचे सोचने के इस ज़हरीले अन्दाज़ को कुछ मुसलमानों ने भी अपनाया।

खुली बात है कि जब पहले दुनिया के सामने हाथ पैर वाली, प्रतिमा पेश की जायेगी तो उसके प्रभामण्डल और उसकी महिमा की अभिव्यक्ति उसके आकार के अतिरंजना के हिसाब से की जायेगी। और फिर दावा किया जाएगा कि यह ढांचा ब्रह्माण्ड की सृष्टा है, तो कौन गम्भीर चेतना रखने वाला मनुष्य इसको स्वीकार करेगा? अतएव इस्लाम ने बोध के साकारात्मक ढंग को रद करके नकारात्मक ढंग अपनाया।

''लोग जो–जो गुण उसके मानते हैं सम्मानों का मालिक तुम्हारा पालने वाला इन सबसे पवित्र है''

यह तरीक़ा इसलिए अपनाया गया कि मानव प्रगति करते–करते चेतना की मंज़िल में आ चुका है पहले पूरी दुनिया में एक ''अरस्तू'' और ''अफ़लातून'' होता था। अब चिन्तन की सुरूचि ने प्रत्येक व्यक्ति को सूक्ष्म अध्ययन का इच्छुक बना दिया था। अतः इस्लाम के महानतम दार्शनिक हज़रत अली (अ0) ने गुण सूचक कल्पना के ज़हरीले अन्दाज़ को बदला और गुणों के नकारने का दर्शन प्रस्तुत किया।

''अल्लाह की तौहीद की सम्पूर्णता यह है कि उसके लिए परिशुद्धता मानी जाये और उसको परिशुद्ध मानने की सम्पूर्णता यह है कि समस्त गुणों को नकारा जाये''

और कभी समद (निराधार) का स्पष्टीकरण करते हुए इसी अर्थ को और ज़ियादा साफ़ करके बताया कि:

'' न वह नाम है न शरीर है, न समान है न साम्य है, न सूरत है न मूर्ति है, न वह सीमा है न सीमित है, न स्थल है न पात्र है, न उसके लिए कैसा का सवाल है न कहाँ का सवाल है, न उसके लिए यहाँ का अर्थ है न वहाँ का अर्थ है, न (किसी के) ऊपर का अर्थ है, न वह शून्य है न भराव है, न उठक है न बैठक है, न स्थिर है न गति है, न अंधियारा है न प्रकाशमय है, न आध्यात्मिक है न इन्द्रियाशक्ति है, उससे कोई स्थान रिक्त नहीं है और न किसी स्थान में उसकी समाई की गुंजाइश है, न वह किसी रंग पर है, न मन में आए किसी विचार पर है, न किसी सुगन्ध के ढंग से है, वह इन सब बातों से विशुद्ध है।''

इस चमत्कारपूर्ण कथन पर ध्यान दीजिए कि प्रत्येक बड़े से बड़े दार्शनिक की प्रत्येक शंका का भरपूर और उसकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने वाला जवाब है। खुली हुई बात है कि जब कोई भी विचारक कल्पना जगत में विद्यमान के प्रारम्भिक चरणों में पहुँचेगा और अस्तित्व के सर्वप्रथम अभिप्राय को समझने की कोशिश करेगा तो उसके सामने सभी विद्यमानों से पहले मात्र अस्तित्व ही अस्तित्व प्रमाणित होगा। और विचारक के लिए पहले कठिनाई यही दरपेश होगी कि वह इसका नाम क्या रखे। उसकी ज्ञान सूची में जितने भी नाम होंगें अस्तित्वधारियों के होंगे। अस्तित्व धारियों के उद्गम और कारक का उसे नाम ही मालूम न होगा।

इसके बाद '' वजूद'' की इस विधा को

शरीर भी नहीं कह सकेगा और न कोई उसका रूप परिकल्पित कर सकेगा। न उसकी कोई हदबन्दी का सकेगा न उसके लिए कोई स्थान सोच सकेगा। न उसको कहाँ इसको अचल कह सकेगा गतिमान कह सकेगा न इसको रौशनी और कैसे की श्रेणी में गिन सकेगा कल्पना न की इस मंज़िल में उसको शून्य कह सकेगा न और असीमित विस्तार को स्वतः उससे भरा हुआ मान सकेगा। न इसको अचल कह सकेगा न गतिमान कह सकेगा। न इसको रोशन कह सकेगा न अंधेरा कह सकेगा। न इसको किसी रंग से व्याख्या कर सकेगा। क्योंकि वह तो बस "अस्तित्व" होगा। और यह सब बातें अस्तित्वधारी या विद्यमान के लिए हो सकती हैं।

इसके बाद हज़रत अली (अ0) ने गुणों निर्गुणता की ओर संकेत किया है कि,

"उसकी विशेषता की कोई निरोपित सीमा नहीं है और न उसकी वाक द्वारा परिभाषा सम्भव है।"

अभिप्राय यह है कि निर्गुणता से यह न समझ लिया जाये कि वह प्रथम अस्तित्व कोई क्षमता ही नहीं रखता बल्कि यथार्थ यह है कि ईश्वर की कोई विशेषता या गुण सीमित नहीं है। और हम जो गुण उसके लिए सोचते हैं वह सीमित होता है। ईश्वर के गुण जिस महिमा और जिस ढंग के हैं उसके भाष्य के लिए शब्द ही नहीं रचे जा सकते। क्योंकि उनको समझा ही नहीं जा सकता।

चूंकि शब्द केवल वही समझ में आ सकते हैं जो लौकिक जगत की विद्यमान चीज़ों के लिए प्रयोग किये जाते हैं। हज़रत अली (अ0) ने मानों यह कारण प्रकट सभी ईश्वरीय विशेषताओं को विचारक के शास्त्रीय स्तर को सौंप दिया। ताकि वह खुद फैसला कर लें कि जब हमारा तुच्छ सीमित अस्तित्व अनगिनत आश्चर्यजनक गुणों का मालिक है तो वह प्रथम असीमित अस्तित्व जो बस अस्तित्व ही अस्तित्व है, इसकी विशेषता की क्या शान हो सकती है।

अतः प्रत्येक दार्शनिक जितना भी ऊँची उड़ान और जितना भी गहराई में डूब जाने की क्षमता रखता हो वह अपने–अपने स्तर और शास्त्रीय आदर्श की बुनियाद पर प्रथम अस्तित्व की महिमा और प्रताप का अन्दाज़ा ख़ुद लगा ले। और अपनी–अपनी बोध की सुरूचिता के अनुसार अस्तित्व के उद्गम की महिमा और अधिकार की कोटि का अनुमान लगा लें ताकि इसके बाद भी यह सोचने की गुंजाइश बची रहे कि मैंने जो कुछ अन्दाज़ा लगाया है वह अब भी सीमित अनुमान है। उसी की ज़ात (हस्ती) अनुमान और अन्दाज़े से ऊँची है। अगर आप भी चाहें तो उसकी विशेषता के असीमित होने का अन्दाज़ा लगा सकते हैं।

आइये कल्पनाजगत में इसी प्रथम कारक सृष्टि के उद्गम, परिशुद्ध अस्तित्व की ओर चलें। एक अस्तित्व, बस अस्तित्व, जिसके अलावा अभी कुछ नहीं। उसकी क्षमताओं के लिए कौन सा आदर्श और कौन सी सीमा निर्धारित की जाये। क्योंकि यही अस्तित्व कारण बनने वाला है पूरी आकाशगंगा व्यवस्था का, इसीकी कल्पित गोद में सृष्टि आंख खोलने वाली है, यही सृष्टि व्यवस्था तक, प्रत्येक व्यवस्था का अविष्कारक और प्रत्येक परमाणु का सृष्टा है। एक परमाणु की क्या बिसात है उसका आयतन (टवसन्डम) क्या है, एक सूक्ष्म कण में कितने करोड़ परमाणु होते हैं और एक परमाणु में कितनी विशिष्टताएं और कितने योग अंश होते हैं, एक परमाणु में दुसरे परमाणु की अपेक्षा क्या विशेषता होती है। स्वतन्त्र वातावरण के परमाणु और बन्द शारीरिक परमाणु में क्या भेद है, कीटाणु और शारीरिक परमाणु में क्या अन्तर है, नक्षत्र और स्थिर तारों की परमाणु क्षमता में क्या अन्तर है और फिर इनकी संख्या सौर मण्डल में कितनी जाकर बैठती है। और हमारी आकाशगंगा में किस संख्या में परमाणु पाये जाते हैं और पूरे संसार में इनकी संख्या कितनी हो जाती है। इन सब बातों को सामने रखते हुए अगर केवल

परमाणु को ही विचार विषय बना लिया जाये तो मानव पीढ़ियाँ मिल जुल के इसका हिसाब नहीं लगा सकतीं। तो फिर सृष्टि के उद्‌गम की सिफ़ाते ज़ात (वह गुण जो हस्ती ही में समहित है) का कैसे अनुमान हो सकता है।
बहरहाल वह है और बस है–

''वह क्या है, क्यों कर है, कहाँ है, बहरहाल जैसा भी है उसको खुद उसके सिवा कोई नहीं समझ सकता''

यही कारण है कि इस्लाम ने हमारे कर्तव्यों में यह बात शामिल नहीं की है कि हम ईश्वर का तत्वार्थ समझने में अपना सारा समय लगा दें। क्योंकि उसकी कल्पना ही सम्भव नहीं है।

''न कल्पना पखेरू उसका तत्वार्थ पा सकता है न समझ उसके प्रताप का अुनभव कर सकती है।''

अतएव बस हम संक्षेप में यही सोच सकते हैं कि, ''वह वह है उस जैसा उसके सिवा कोई दूसरा नहीं और फिर उसके अलावा कोई उपास्य नहीं, वह महान अर्श का पालने वाला है'' यह संक्षिप्त कल्पना प्रत्येक मनुष्य के लिए वाजिब (अनिवार्य) है और इसलिए वाजिब है कि प्रत्येक अस्तित्वधारी के लिए आवश्यक है कि अपने अस्तित्व को सही सलामत रखने हेतु वजूदी सम्पर्क रखे जिसको दूसरे शब्दों में ''ईमान कहा जा सकता है।

यहीं से यह बात भी स्पष्ट हो जाती है कि उपासना जो ''अस्तित्व'' और ''अस्तित्वधारी'' विद्यमान के बीच निरन्तर सम्पर्क बनाए रखने का एक तरीक़ा है मनुष्य के लिए क्यों आवश्यक है। खुली हुई बात है कि कोई भी अस्तित्वधारी, अस्तित्व के उद्‌गम से अलग–अलग रहते हुए अपने अस्तित्व के वास्तविक लाभ नहीं उठा सकता। चूंकि प्रत्येक छोटी शक्ति बड़ी शक्ति से चार हो के ही नये सिरे से शाक्तिशाली बन सकती है। इसलिए हम को भी अपनी उपासनाओं द्वारा उस अनादि अस्तित्व से लौ लगाना है जो हमारे अस्तित्व का प्रमुख कारण है। बस इसके बाद बहस का एक नया द्वारा खुलता है कि सर्म्पक किस ढंग से स्थापित किया जाए। क्योंकि एक तरफ़ सम्पूर्ण शक्ति है जिसके बल का अनुमान ही असम्भव है। दूसरी ओर हमारी शक्ति है जिसके कम से कम होने का भी अनुमान दुष्कर है। स्पष्ट है कि इतनी असन्तुलित शक्तियों को असावधानी के साथ एक दूसरे से जोड़ दिया जाए तो शक्ति प्राप्त करने के बजाए दुबंल शक्ति भस्म हो जाएगी। इसीलिए एक ऐसे दक्ष तकनीशियन की आवश्यकता है जिसको दोनों शक्तियों का अनुमान हो ताकि वह पहले निश्चय कर सके कि कितने पावर का ट्रांसफ़ार्मर उपयोग करने की आवश्यकता होगी और कितनी देर कितनी मरतबा इस्तेमाल करना होगा। हम इस ईश्वरीय शक्ति से मानवीय शक्ति को जोड़ने वाले दक्ष, उपाधिप्राप्त तकनीशियन, जो पावर हाउस का प्रभारी भी है, को पैग़म्बर, नबी और रसूल उसके उत्तरधिकारी को इमाम (मासूम) कहते हैं। जिनके प्रमाणीकरण की पद्धति इस समय हमारे विचार विषय से बाहर है। क्योंकि इस वक्त हम केवल विधाता की पहचान की आवश्यकता और उसकी पद्धति पर बात कर रहे हैं।

चुनांचे यह बात किसी हद तक साफ़ हो गई कि सभी अस्तित्व धारियों को अनादि अस्तित्व से सर्म्पक रखना स्वतः उनके लिए हितकर है। सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि अगर छोटी ताक़त बड़ी ताक़त से सम्बद्ध रहनी है तो छोटी शक्ति कई हज़ार गुना शक्ति की धनी हो जाती है। एक छोटा चुम्बक जब तक अकेला रहता है अधिक से अधिक अपने बराबर बोझ उठा सकता है लेकिन यही चुम्बक यदि विधिवत विद्युत शक्ति से जोड़ दिया जाए तो मनों बोझ उठा लेता है। बिल्कुल ऐसे ही हमारा शारीरिक बल अधिकाधिक से लौ लगाता है तो केवल दो उंगलियों पर ''ख़ैबर'' के दरवाज़े को उठा लेता है और दुनिया को सबक़ देने के लिए इरशाद होता है कि,

"मैंने ख़ैबर का दरवाज़ा शारीरिक शक्ति से नहीं बल्कि ईश्वरीय शक्ति से उखाड़ा है।"

इसके बाद ईश्वर की पहचान की पद्धति के विषय में इतना अर्ज़ कर दे कि पहचान से अभिप्राय तत्वार्थ का जानना नहीं है। बल्कि संक्षेप में मात्र उसके मौजूद होने और अपना मालिक और सृष्टा होने का विश्वास रखना हैं क्योंकि गुणों अथवा विशेषताओं के साथ उसकी कल्पना वांछित नहीं है।

यहाँ पहुँच कर एक गम्भीर शंका पैदा होती है जिसको साफ़ कर देना बहुत ज़रूरी है। क्योंकि वही हमारे विचार विषय की आधार शिला है। और वह यह है कि उपासना में पहले आवशयक है कि जिसकी उपासना की जा रही है उसकी सही पहचान हो और पहचान के लिए ज़रूरी है कि उसका रेखा चित्र और कल्पना मानस पटल पर अंकित हो लेकिन जो मस्तिष्क में आ जाए वह ईश्वर नहीं होता। फिर पहचान किस तरह सम्भव होगी। यह शंका अपनी जगह सचमुच जटिल समस्या बन जाती है और निश्चय ही इसका आवश्यक है क्योंकि इस शंका समाधान के बिना हमारी सारी उपासना उस रेखा चित्र की उपासना की हो जाती है जो निश्चित ही ईश्वर नहीं है।

यह एक ख़तरनाक मोड़ है जहाँ न केवल सारी उपासना के व्यर्थ जाने की निशचित सम्भावना पैदा हो जाती है। बल्कि "नेकी बरबाद गुनाह लाज़िम" का ख़तरा पैदा हो जाता है। इसी ख़तरे को दूर करने के लिए इस्लाम का आहवान करने वालों नें रोका है कि अल्लाह का ख़याल गुणों के सहारे न करो क्योंकि तुम उसकी वास्तविक कल्पना नहीं कर सकते हो। फिर संक्षिप्त कल्पना के लिए कुरआन ने यह पद्धति बनाई है कि उपासना के समय उसका ख़याल किस तरह करना चाहिए। चुनाँचे हज़रत याक़ूब पैग़म्बर के वंशजों के द्वारा कुरआन इस तरह पाठ पढ़ाता है।

"क्या तुम उस वक्त मौजूद थे जब याक़ूब की मौत का वक़्त क़रीब हुआ और उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि तुम मेरे बाद किस की उपासना करोगे तो उन्होंने उत्तर दिया कि हम आपके ईश्वर और आपके बाप–दादा इब्राहीम, इस्माईल और इस्हाक़ के यकता ईश्वर की उपासना करेंगे और हम तो इसी बात पर ईमान लाये हैं।"

आयत में कितने साफ़ ढंग से उपासना के अवसर पर अल्लाह की कल्पना की पद्धति बताई गई है और उत्तर में विशेषताओं का सन्दर्भ दिये बिना इस्लाम के मौलिक प्रचारकों के हवाले से कल्पना की बात की जा रही है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक जाति और प्रत्येक धर्म का एक खुदा और उसके गुणों का एक रेखाचित्र हों। और हम इन सब के बजाए उस ख़ुदा की उपासना करेंगे जिसका विस्तृत ज्ञान बस आप को आप के पूर्वजों इब्राहीम, इस्माईल और इस्हाक़ को है। हमारी शक्ति से बाहर है कि हम उस विस्तार का नमग्र ज्ञान प्राप्त कर सकें।

अतः कुरआने मजीद की उपर्युक्त पद्धति के अनुसार हमको भी अपनी कल्पना में "मासूम" संदर्भ लेना आवश्यक होगा। यानी यह सोचना होगा कि हम नहीं जान सकते कि वह क्या है कैसा है ! हम तो बस उस ख़ुदा की उपासना कर रहे हैं जिस को हज़रत पैग़म्बर (स0) और उनके निष्पाही (मासूम) परिजनों (अहल–ए–बैत) ने पेश किया है और उसकी उपासना का आदेश दिया है।

हमें नहीं मालूम कि इसका विवरण क्या हैं ! यह बात बस हज़रत मोहम्मद (स0) और उनके "अहल–ए–बैत" जान सकते हैं कि वह क्या है और किन विवरणों बाला है! हम तो बस मोहम्मद (स0) और उनके "अहल–ए–बैत" के ईश्वर की उपासना करते हैं।

इस अभिप्राय को ज़रा और ज़ियादा स्पष्ट शब्दों में यूँ प्रस्तुत किया जा सकता है कि हम उस ख़ुदा की इबादत करते हैं जिसकी प्रमाणिकता के लिए हज़रत इमाम हुसैन (अ0) ने

(बक़िया पेज नं0 16 पर...............)

हक़ीक़ते दीन

किस्त –6

मुफ़क्किरे इस्लाम डॉ0 मौलाना सै0 कल्बे सादिक़ साहब क़िब्ला

''उलमा हिम्मत से काम लें तो फ़िरकापरस्ती कम हो जाये''

ये जो फ़िरक़ापरस्ती का इतना बड़ा गुब्बारा (Baloon) अपको दिखाई दे रहा है। इस गुब्बारे में कुछ भी नहीं है। एक सूई फूंकिए, सारा क़िस्सा खत्म। जैसा कि कराची मे आपने देख लिया। आपने देखा होगा कि चन्द साल पहले क्या माहौल था? सब हवा निकल गयी इस गुब्बारे की। सिर्फ़ चन्द लोग हैं दोनों तरफ के जिनकी हिम्मत आप तोड़ दें। सारा माहौल ठीक हो जायेगा। बस हिम्मत की ज़रूरत है। सिर्फ़ एक काम होने लगे तो माहौल काफ़ी हद तक बदल जायेगा। सिर्फ इतना ही होने लगे कि जब कोई शिया मारा जाये किसी सुन्नी के हाथ से तो सुन्नी उलमा उसके जनाज़े में आ जायें और जब कोई सुन्नी मारा जाये किसी शिया के हाथ से तो शिया उलमा उसके जनाज़े में आ जायें। देखिएगा कि माहौल कितना बदल जायेगा। अगर इतनी सी भी बात के लिए हिम्मत नहीं है तो फिर चूडियाँ पहन कर घर में बैठ जायें। दानों फ़िरकों को एक दूसरे के सिलसिले में बड़ी गलतफ़हमियाँ हैं। यह ग़लतफ़हमियाँ क्यों फैल रही हैं? मैंने अर्ज़ किया था मस्जिदें सबके लिए खोल दी जायें। तो दो चार दिन धड़ पटक होगी, गद्दम गद्दा होगी। फिर सब आपस में एडजस्ट हो जायेंगे। फिर एक दूसरे को खुद समझेंगे। उनको (सुन्नी हज़रात को) ये ग़लतफ़हमी है कि जब शिया पानी पीते हैं तो किसी सुन्नी भाई को थूक कर देते हैं। 'अस्तग़फिरूल्लाह' भय्या हम तो किसी जानवर को भी थूक कर पानी नहीं पिलाते हैं। किसी की अक़्ल यह गवारा कर सकती है कि कोई इन्सान इतना ज़लील हो जाये कि एक इन्सान को थूक मिलाकर पानी पिलाये मगर मुल्ला पर इतना ईमान है और अल्लाह पर इतना कमज़ोर ईमान है। अल्लाह मियाँ ग़लत कह सकते हैं मगर मुल्ला थोडी गलत कह सकते हैं। हमारे सामने तो अख़्लाक़े मोहम्मदी (स०) है। हमारे सामने तो अख्लाके हुसैन (अ०) है। हमारे सामने तो उस हुसैन (अ०) का किरदार है कि जिसने अपने बच्चे की प्यास को नज़र अन्दाज़ करके हुर के प्यासे लश्कर को पानी पिलाया था। जिस क़ौम के सामने ऐसे किरदार हों वो यह जसारत कर सकती है कि किसी को थूक कर पानी पिलाए। सारी ग़लतफ़हमियां उस वक़्त दूर होंगी जब हम एक दूसरे के क़रीब आयेंगे।

''कुरआन की हिफाज़त की ज़िम्मादारी अल्लह ने ली''

हर आसमानी किताब में तहरीफ (change) हो गई,तब्दीली हो गयी और कुछ का कुछ कर दिया गया लेकिन सिर्फ़ एक किताब है 'कुरआने मजीद' जो हर तरह की तहरीफ़ (change) और तब्दीली से पाक है। हर तरह की कमी और ज़्यादती से पाक है। यह हमारा अकीदा (Belief) भी है और (Fact) भी है। कुरआने मजीद के लिए खुद कुरआन में आयत (Verse) है कि ''हमने कुरआन को नाज़िल किया है और हम खुद कुरआन को बचायेंगे''। हम कुरआन में किसी भी तरह की तहरीफ़, तब्दीली और कमीबेशी

नहीं होने देंगें। हिफ़ाज़ते कुरआन का बेहतरीन तरीक़ा तो यह था कि रसूल (स०) को यह हुक्म दिया जाता कि पूरे कुरआन मजीद को आप एक बक्से (Box) में बन्द करके लाक (Lock) करके छुपा कर रख दें कि इसमें कोई तब्दीली न कर सके, लेकिन अल्लाह ने यह नहीं किया। कुरआने मजीद की कापियाँ यहूदियों के हाथों में भी आ गईं, ईसाइयों के हाथों भी आ गईं, दुश्मनाने खुदा के हाथों में भी आ गईं, मगर यह अल्लाह की तरफ़ से बिठाए हुए पहरे थे कि यहूदी, ईसाई और दुश्मनाने खुदा कुरआन में ज़ेर और ज़बर का भी फ़र्क़ न कर सके। कोई तब्दीली और कोई change न कर सके। इसी चीज़ को मोजिज़ा (Miracle) कहा जाता है।

अल्लाह ने कुरआन के लिए वादा किया था कि हम कुरआन को बचायेंगे इसीलिए कुरआन को बचा लिया। हदीसों के लिए वादा नहीं किया था, इसीलिए कोई नहीं कह सकता कि हदीसों के लिए वादा किया हो कि हम हदीसों को भी बचायेंगें।

जिस कुरआन की हिफ़ाज़त (Protection) का वादा किया था वो कुरान दुश्मनों के हाथों में रहा और दुश्मन उसमें तब्दीली न कर सके और जिसकी हिफ़ाज़त का वादा नहीं किया था, उसमें खुद मुसलमानों ने तब्दीलियाँ कर दीं। कोई इससे इन्कार नहीं कर सकता कि हदीसों में तब्दीलियाँ नहीं हुई हैं। झूठी हदीसें गढ़ी गई हैं। तमाम इस्लामी स्कॉलरस (Scholars) जानते हैं कि पुरा इस्राइलियात का एक बाब (Chapter) है। हदीसों की हिफ़ाज़त का वादा नहीं किया था तो हदीसों की हिफ़ाज़त नहीं हो सकी।

''मौला अली (अ०) के क़ौल को कम्पयूटर की चिप ने समझा दिया''

मौला अली (अ०) ने अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (र०) के सामने एक रात सूर-ए- अलहम्द की तफ़सीर (Commentary) ब्यान करना शुरू की और पूरी रात गुज़र गयी लेकिन तफ़सीर खत्म न हुयी। जब पूरी रात खत्म होने लगी तो मौला अली (अ०) ने फ़रमाया कि यह तो पूरे सूरे की तफ़सीर है। अगर मुझे मौका मिले तो सूर-ए- अलहम्द के पहले हर्फ़ (Alphabet) 'अलिफ़' की तफ़सीर में पूरी रात ख़त्म कर देता, फिर फ़रमाया कि ऐ इब्ने अब्बास कायनात के सारे उलूम सिमट कर आ गये हैं कुरआन में और पूरा कुरआन सिमट कर आ गया है 'सूर-ए- अलहम्द में और पूरा सूर-ए- अलहम्द सिमट कर आ गया है 'बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम' में और बिस्मिल्लाह' सिमट गयी है 'बे' में और 'बे' सिमट गया है उस नुकते (Point) मे जो 'बे' के नीचे होता है। तो अब कोई सवाल कर सकता है कि सारे उलूम सिमट कर एक नुकते में कैसे आ गये? तो मैं अर्ज़ करता हूँ कि दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी है LIBRARY OF CONGRESS जो अमेरिका के शहर वाशिंगटन में है। अजीब और गरीब लाइब्रेरी है। मुझे जो बताया गया है कि हिन्दू वहाँ पढ़ने आते हैं, ईसाइ वहाँ आते हैं, यहूदी वहाँ पढ़ने के लिए आते हैं, नहीं आते हैं तो बस मुसलमान। शायद इसलिए कि वह पहले ही से पढ़े लिखे हैं, उनको पढ़ने लिखने की क्या ज़रूरत? दुनिया की किसी ज़बान की शायद ही कोई ऐसी किताब हो, जिसकी कापी फोटो कॉपी या फिलम वहाँ मौजूद न हो। सब कुछ मौजूद है लेकिन सवाल यह है आदमी के पास टाइम कम है और कोई खास चीज़ देखना है तो पूरी लाइब्रेरी कहाँ तक छानता फिरे। इस काम को आसान बनाने के लिए इनसाइकलोपीडिया (Incylopedia) बना दी गयी कि आप को जो भी चीज़ तलाश करना है वह इनसाइकलोपीडिया में मिल जायेगी। ठीक है, इनसाइकलोपीडिया एक लाइब्रेरी तो नहीं है लेकिन उसकी भी बहुत सी जिल्दें हैं तो ज़रूरत

(Need) ईजाद (Invention) की मां होती है। अब जब यह कम्पयुटर ईजाद हुआ तो उसने एक अजीब इन्केलाब बरपा कर दिया है।

आप को मालूम है कि अब छोटी–छोटी चिप (Chip) बन गई है। छोटी–छोटी चिपस और उनके अन्दर मालूमात (Knowledge) का खज़ाना है। आप को कोइ चीज़ तलाश करना है तो चिप की मदद से सेकन्डों में तलाश कर सकते हैं। आप ने कम्पयुटर को बताया कि हम सिर्फ़ यह चीज़ देखना चाहते हैं और कम्पयुटर ने Automatically Read करके वो चीज़ निकाल कर दिखा दी। आइन्दा चन्द सालों में यह चिप इतने छोटे हो जायेंगे जितने आल पिन का (Head) होता है। इतनी सी चिप के अन्दर पूरी इनसाइकलोपीडिया समाइ हुई होगी। पूरी पूरी लाइब्रेरियों की मालूमात इसके अन्दर मौजूद होगी। आज जब ये हकीकत हमारे सामने आई कि उलूम सिमट कर आ सकते हैं इनसाइकलोपीडिया में और इसाइकलोपीडिया सिमट कर एक ऐसी चिप में आ सकते हैं जिस का साइज़ 'आलपिन' के हेड के बराबर हो तो आज हम को अली (अ०) के क़ौल की कद्र हो सकती है अगर दुनिया इन्साइकलोपीडिया को ऑलपिन के हेड में समेट सकती है तो कुदरत कुरान को नुक़्त–ए–बा–ए–बिस्मिल्लाह में क्यों नहीं समेट सकती?●

उनवाने हयात

शाएरे हुसैनियत सै0 मुहम्मद अतहर साहब ज़ाएर सीतापूरी

दुख भरी है करबला की वारदात
आसुओं से तर है दामाने फ़रात
तेरे बल पर हैं थमे चर्ख़ों ज़मीं
ऐ हुसैनी अज़्म ऐ रूहे सबात
तीर की ज़द गरदने मासूम है
हाँ सभंल ऐ इन्क़ेलाबे काएनात
देख ऐ शाने अज़ा, जाने न पाए
बात, और मज़लूम के मातम की बात
करबला इक ज़ीस्त का मेयार है
मरने वालो! उफ़ रे उनवाने हयात
सर खुले घर से निकलता है कोई
आय–ए–ततहीर बनती है क़नात
आख़री आबादि–ए–आलम की शब
रात और आशूर की पुरहौल रात
माँ के अरमाँ मौत के अरमाँ समेत
क़ासिमे नाशाद की देखो बरात
फिर है ज़ाएर को ज़ियारत की हवस
अलमदद ऐ रहबरे राहे नजात

(बकिया पेज नं0 13 का,............)

अपने घर–बार समेत महान बलिदान प्रस्तुत किया। वह क्या है? कैसा है? हम नहीं जानते, बस इतना जानते हैं कि उसका पूरा विवरण वही है जिसका संक्षेप या विस्तार इमाम हुसैन (अ0) के मन मस्तिष्क में दसवीं मोहर्रम के अंतिम सज्दे के समय रहा होगा और हम उसी की उपासना करते हैं। अन्त में एक बात और, पहचान या ज्ञान के क्रम में यह बात आवश्यक नहीं है कि जिसकी पहचान या जिसके बारे में ज्ञान वाछिंत है वह अनिवार्य रूप से सामने भी हो। बल्कि उसकी विशेषताओं और शक्तियों की जानकारी ही सच्ची पहचान और सच्चा ज्ञान है क्योंकि बहुत सी चीज़ें मौजूद होती है वह प्रयोग में भी आती हैं परन्तु अगर हम उनकी विशेषताओं से अनभिज्ञ हों तो उनका जानना–मानना नहीं कहा जायेगा। चुनाँचे बहुधा जीवन भर साथ रहने वाले दोस्तों की हक़ीक़त हम पर उनके मरने के बाद खूलती है और बहुधा और बहुधा हज़ारों हज़ार साल पहले गुज़री विभूतियों का स्थान हमें आज भी मालूम है।

(तौहीद.2 पेज 53 से 64 तक प्रकाशन मई 1985)

मुख्य समाचार

दुनिया की सबसे बड़ी नमाज़े जमाअत, नजफ़ व करबला के रास्ते में

अहलेबैत न्युज़ एजेन्सी अबना के अनुसार इराक़ में अरबईने हुसैनी (चेहलुम) के मौक़े पर लाखों की तादाद में पहुँचे ज़ाएरीन ने जुमे को मुल्क की तमाम सड़कों पर नमाज़े जमाअत क़ाएम करके तारीख़ी मिसाल पेश कर दी। तफ़सीलात के मुताबिक़ 18 नवम्बर 2016 ई0 जुमा को हरमे हज़रत अली, नजफ़ और हरमे हुसैन, करबला में एक साथ नमाज़े जमाअत क़ाएम की। जिसके साथ–साथ उन दो शहरों के दरमियान पैदल चलने वाले ज़ाएरीन ने भी एक साथ पूरे रास्ते जो तक़रीबन 80 किलो मीटर लम्बा है में नमाज़े जमाअत क़ाएम करके दुनिया की सबसे बड़ी नमाज़े जमाअत की मिसाल पेश की।

नमाज़े जमाअत के एख़्तेताम पर लाखों फ़रज़न्दाने तौहीद ने हम आवाज़ हो कर एक ''अल्लाहो आकबर'' की सदा बलन्द की।

मरजए जहाने तशय्यो हज़रत आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यद अली हुसैनी सीसतानी मुद्द ज़िल्लहुल आली ने एक सवाल के जवाब में फ़रमाया है कि अरबईने हुसैनी के मौक़े पर ज़ाएरीन के लिए सहूलत फ़राहम करने वाले तमाम ओमूर कसीर अज्रो सवाब के हामिल हैं लेहाज़ा ज़ाएरीन के लिए बेहतर से बेहतर खाने पीने की चीज़े और उनके रास्तों में साफ़–सफ़ाई का बन्दो बस्त करके ज़ाएरीन के सहूलत फ़राहम की गई।

कसीर तादाद में ज़ाएरीने हुसैनी करबला–ए–मुअल्ला पहुँचे

अहले बैत न्युज़ एजेन्सी अबना के अनुसार इराक़ की विज़ारते दाख़ला के फ़ौजी मुशीर ने कहा है कि अरबईने शोहदा–ए–करबला मौक़े पर ज़ियारत के लिए बीस लाख से ज़ियादा तो सिर्फ़ ईरानी ज़ाएरीन, अरबईने हुसैनी में शिरकत के लिए इराक़ में दाखिल हो चुके हैं और ये सिलसिला अभी जारी है। मेजर जनरल मुहम्मद नासिरुल हुसैन ने मंगल को कहा कि ईरानी ज़ाएरीन ने माहे सफ़र की पहली तारीख़ से इराक़ में दाख़िल होना शुरू किया और चेहलुम आते आते उन ज़ाएरीन की तादाद में बहुत ज़ियादा इज़ाफ़ा हुआ है। इस बीच इराक की सरहद शलमचा के डायरेक्टर मुहम्मद ख़ुयून ने ईरान की विज़ारते ख़ारजा के हुक्काम और दोनों मुलकों के सरहदी हुक्काम और कमान्डरों के साथ एक इजलास में, ज़ाएरीन को बेहतरीन अन्दाज़ में सहूलतें फ़राहम किये जाने के अक़दामात की क़र्ददानी की। इराक़ में ईरान के सफ़ीर हुसैन दानाई ने भी चज़ाबा सरहद पर अरबईने हुसैनी में शिरकत करने वालों के साथ दोनों मुल्कों के सरहदी हुक्काम का तआउन जारी रखने की ताक़ीद की।

लखनऊ की करबला तालकटोरा में चेहलुम का जुलूस सम्पन्न

21 नवम्बर 2016 (सोमवार) को लखनऊ के इमाम बाड़ा नाज़िम साहब नखास से चेहलुम का जुलूस बरामद हुआ अन्जुमनें नौहा व मातम और गिरया व बुक़ा करती हुईं करबला तालकटोरा पहुँची और जनाबे फ़ातेमा को उनके लाल का पुरसा पेश किया। जगह–जगह अज़ादारों के लिए चाय, शरबत, और खानों की सबीलों का अच्छा इन्तेज़ाम था। पुर अम्न तरीक़े से ये जुलूस करबला ताल कटोरा पहुंच कर समाप्त हुआ।

नाईजीरिया में जुलूसे अज़ा पर फ़ौज के हमले में 100 शिया मुसलमान शहीद, कई ज़ख़्मी

अहलेबैत न्युज़ एजेन्सी अबना के अनुसार नाईजीरिया की इस्लामी तहरीक के तरजुमान ने इस मुल्क की फ़ौज और पुलिस के वहशियाना एक़दाम की ख़बर देते हुए कहा है कि 19 नवम्बर को नाईजीरिया की फ़ौज के हमले में 100 के करीब हुसैनी अज़ादार शहीद और दसियों ज़ख़्मी हुए हैं।

फ़ौज ने अरबईने हुसैनी के अय्याम की मुनासिबत से निकाले गये पुर अमन जुलूसे अज़ा पर आंसूगैस और गोलियों के ज़रिये वहशियाना हमला किया, जिसका मक़सद शिया मुसलमानों को उस मुल्क में कमज़ोर बनाना है। फ़्राँन्स की न्युज़ एजेन्सी ने भी इस वाक़िए की रिपोर्ट देते हुए कहाः ये वाक़ेआ ऐसे हाल में रूनुमां हुआ कि नाईजीरिया के शिया मुसलमान अपनी मज़हबी रूसूम अन्जाम देने में मसरूफ थे।

नाईजीरिया के एक पुलिस कर्मी ने भी आम लोगों पर की गई फ़ाइरिंग की तसदीक़ की लेकिन शहीद होने वालों की तादाद को बयान करने से इन्कार कर दिया। याद रहे कि पिछले वर्ष नौ से ज़्यादा अज़ादारों पर बुको हराम नामक तनज़ीम ने ख़ुदकश हमलाआवर लशकर कशी की थी इस साल नाईजीरिया की सऊदी नवाज़ फ़ौज ने बुको हराम की जगह लेली है।

पिछले साल ही शहादत इमामे अली रज़ा अ0स0 की मजलिसे अज़ा पर फ़ौज ने हमला कर दिया था इस हमले में हज़ार के क़रीब अज़ादार शहीद हुए थे जबकि नाईजीरिया में शिओं के क़ाएद शेख़ ज़कज़की को गिरफ़तार कर लिया गया था। इस वाक़ए में शेख़ ज़कज़की शदीद ज़ख़्मी भी हुए थे। ज़राए के मुताबिक नाईजीरियन फ़ौज जो रियाज़ की करीबी इत्तिहादी समझी जाती है, नाईजीरिया में शिआ मुसलमानों की बढ़ती हुई ताक़त से ख़ौफ़ ज़दा है और इस तरह शिया मुसलमानों को दबाने की नाकाम कोशिश कर रही है।

हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह में मजलिसे अज़ा क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब का ख़िताब

18 नवम्बर 2016 ई0 को अजमेर शरीफ़ में वाक़े ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हज़रत मुईनुद्दीन चिश्ती र0 अ0 की दरगाह के एहात–ए–नूर में मजलिस को ख़िताब करते हुए क़ायदे मिल्लत मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी ने फ़रमाया कि शिया सुन्नी इत्तेहाद वक़्त की सबसे अहम ज़रूरत है। क़ायदे मिल्लत ने कहा कि इस वक़्त दुनिया में मुसलमानों का क़त्ले आम किया जा रहा है मगर अक़सर मुसलमान सिर्फ ख़ामोश तमाशाई हैं ऐसे लोगों से बचना बहुत ज़रूरी है। मौलाना ने कहा कि हम लोग फ़िरक़ा बन्दियों की ज़न्जीरों में क़ैद हैं और बटे हुए हैं। इसी लिए दुश्मनों के हौसले बढ़ रहे हैं। अपने हक़ूक़ हासिल करने के लिए इत्तेहाद बहुत ज़रूरी है।

वाज़ह रहे कि अजमेर शरीफ़ में हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती र0 अ0 की दरगाह में वाक़े एहात–ए–नूर में पहली बार किसी शिया आलमे दीन ने मजलिस को ख़िताब किया जिसमें शिया और सुन्नी बरादरान का मुशतरक मजमअ था। क़ायदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब जब ख़्वाजा अजमेरी की दरगाह पहुँचे तो बरादराने अहले सुन्नत की बड़ी तादाद ने उनका पुर जोश इस्तेक़बाल किया और बादे मजलिस क़ायदे मिल्लत का शक्रिया अदा किया।